महामृत्युंजय मन्त्र

स्वामी ओंकारानन्द

महामृत्युंजय मन्त्र

स्वामी ओंकारानन्द

ISBN 81-89064-68-1

© सर्वाधिकार सुरक्षित

तृतीय संस्करण 2010

मुद्रित एवं प्रकाशितः
ओंकारानन्द आश्रम हिमालय,
ओंकारानन्द सरस्वती मार्ग, मुनिकीरेती,
पोस्ट शिवानन्दनगर–249192
जिला टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

विवरण

महामृत्युंजय मन्त्र 5

स्वामी ओंकारानन्द जी द्वारा
मन्त्र की व्याख्या 8

मन्त्र जाप के लाभ 20

महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ ॥

यह शक्तिशाली और अन्तर्बोधात्मक प्रार्थना एक अदभुत गुणकारी अमोघ औषधि है। अच्छे स्वास्थ्य, दीर्घ आयु और दुर्घटनाओं से रक्षा कवच का मन्त्र है। लेकिन इससे भी बढ़कर यह ईश्वरानुभूति का एक शक्तिशाली माध्यम है।

स्वामी ओंकारानन्द जी कहते है, मन्त्र जाप ईश्वरानुभूति का एक अति अदभुत

साधन है। ध्यान या मन्त्र जाप एक सघन दिव्य एकाग्रता है जो कि सम्पूर्ण अन्तरात्मा, हृदय, मन और आत्मा यहाँ तक कि भौतिक शरीर का भी रूपान्तरण कर देता है। सघन मन्त्र–ध्यान सम्पूर्ण चेतना को शक्तिशाली बना देता है और उच्च शक्तियों को जागृत करता है तथा निम्न शक्तियों को, समग्र आन्तरिक अस्तित्व को दिव्य चेतना के स्पंदनों द्वारा उन्नत, परिष्कृत, शोधित व रूपान्तरित करता है। इस प्रकार मन्त्र जाप आन्तरिक रूपान्तरण और परिवर्तनशीलता को प्रभावित करता है जिससे प्राणियों में पराकाष्ठाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए सकारात्मक परिस्थितियों का सृजन होता है। यह अमर, अविनाशी और अनन्त ईश्वर

के साथ सम्बन्ध का बोध करवाने वाला एक साधन एवं विधि है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी साधन इतना अद्भुत और सुरक्षित व स्पष्ट और विवेकपूर्ण नहीं है क्योंकि प्रतिदिन व प्रतिक्षण मन्त्र जाप द्वारा साधक अपने आप को दिव्यता में रूपान्तरित कर देता है और सभी बाधाओं को पार कर लेता है।

मन्त्र का प्रभाव व्यक्ति विशेष की पवित्रता, विश्वास, विनम्रता और विवेक पर निर्भर करता है। आम धारणाओं के विपरीत यह मन्त्र मात्र ध्वनि ही नहीं है, इन ध्वनियों में सूक्ष्म सत्ता विद्यमान रहती है।

स्वामी ओंकारानन्द जी द्वारा मन्त्र की व्याख्या

ॐ त्र्यम्बकम्... एक कालातीत मन्त्र है जो कि भगवान के हृदय से प्रभु प्रेमियों के कल्याणार्थ प्रकट हुआ है।

ओम् एक गूढ़ वर्ण है। यह अश्रवणीय ध्वनि तरंगों को प्रसारित करता है लेकिन हमारी परिपूर्ण अन्तरात्मा द्वारा ग्रहणशील हैं। इस वर्ण में सम्पूर्ण दिव्य चेतना विद्यमान है जिसने कि पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रादुर्भूत किया है और जो व्यक्त और अव्यक्त सृष्टि में विद्यमान है।

वास्तव में ओम् ब्रह्माण्ड की दिव्य चेतना है, दिव्य परम तत्त्व का निरूपण है और

ब्रह्म का सच्चा नाम है। इसके अस्तित्व में अनन्त दिव्य हृदय और आत्मा विद्यमान रहती है।

इस 'ओम्' रूपी शरीर में एक शक्तिपुँज विद्यमान रहता है और जब भी आप 'ओम्' का उच्चारण करते है तब ये शक्तिपुँज आपके चतुर्दिक वातावरण को शुद्ध कर देता है। इसी शक्तिपुँज में प्रकाश पुँज भी विद्यमान रहता है जिसमें परमेश्वर की चेतना निवास करती है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है। वह परम प्रेम, परम प्रकाश, परम सौन्दर्य एवं परम शान्ति है। उस परमात्मा की ये सभी शक्तियाँ इस 'ओम्' शब्द में निवास करती

है। इस प्रकार 'ओम्' शब्द का जाप करके आप वातावरण को विषमरसता से मुक्त करते हो, अपनी अन्तरात्मा पवित्र करते हो, और अपने चारों ओर लोगों में एक रूपान्तरण, एक बदलाव लाते हो।

त्र्यम्बकं का अर्थ है तीन नेत्र। परमश्रेष्ठ दिव्य सत्ता तीन नेत्रों वाली है। तीसरा नेत्र सर्वज्ञता का नेत्र है। यह नेत्र अनन्त ज्ञान, परम सत् और प्रत्येक प्रकार के ज्ञान का नेत्र है। यह अजेय पूर्ण ज्ञान, अवर्णनीय और अनन्त ज्ञान की ज्वाला है। इसकी दृष्टि सर्वव्यापक है और समस्त ज्ञान को मात्र एक ही क्षण में प्राप्त कर सकने की क्षमता इसमें है।

साधारण मानव मात्र के लिए एक ही क्षण में दो विभिन्न पदार्थों को पहचानना असंभव है। यद्यपि आप एक ही समय में दो तीन या अधिक पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करने का दम भर सकते हैं लेकिन यह मात्र भ्रम ही होगा। बुद्धि एक से दूसरे ज्ञातव्य विषय पर द्रुत गति से छलाँग लगाते हुये अवर्णनीय वेग के साथ कार्य करती है। दिव्यात्मा एक ही समय में अगणित स्थितियों का ज्ञान रख सकती है। साधारण मनुष्य के लिए यह अद्भुत कार्य कल्पनातीत है और उसकी ग्रहण क्षमता से परे है।

यदि आप ज्यूरिक में है तो आप केवल

ज्यूरिक ही देख सकते हैं, उसी समय लंदन या न्यूयार्क या अदृश्य जगत में क्या चल रहा है, यह आप नहीं देख सकते। लेकिन ईश्वर सभी विषयों का – उनकी पूर्ण समग्रता का प्रत्यक्षदर्शी है। उस परमात्मा की दृष्टि सर्वत्र है जबकि आप की आँख एक ही स्थान पर टिकी होती है। उस परमात्मा की श्रवणेन्द्रि सर्वव्यापक है जबकि आपके कान एक ही स्थान की ध्वनि पर होते हैं। यही त्र्यम्बकं का सारभूत अर्थ है।

यजामहे का अर्थ है – हम ध्यान करते हैं, हम आराधना करते हैं, हम श्रद्धापूर्वक स्तुति करते है।

सुगन्धिं शब्द (सु+गन्धं, सु – उत्तम + गन्ध – सुवास या सुगन्ध) से मिलकर बना है। इस प्रकार सुगन्धिं का अर्थ हुआ – ईश्वर एक बहुमूल्य सुगन्ध है, भगवान अति उत्तम सुवास से परिपूर्ण है। असीम प्रेम की सुवास से परिपूर्ण है एक ऐसा प्रेम जो कभी विकृत नहीं हो सकता, एक ऐसा प्रेम जो अहंकार से मुक्त है।

मानव प्रेम सदैव घृणा से युक्त होता है। यह सीमित होता है क्योंकि इसमें स्वार्थपरता, मिथ्याभिमान और मूर्खता भरी रहती है। ऐसा प्रेम शीघ्रता से बदल जाता है या इसके विपरीत (घृणा) में रूपान्तरित हो जाता है अतः ऐसा प्रेम निन्दनीय है।

यह प्रेम जितना स्वार्थ रहित और दिव्य होगा उतना ही असीमित होगा, तथा यह प्रेम जितना मनुष्य स्वभाव से अनासक्त होगा उतना ही अधिक अपनी सुगन्धि फैलायेगा। इस प्रकार अनन्त पवित्रता और पूर्णता का प्रेम हमें दिव्य ईश्वर में ही मिलता है। इस प्रकार ईश्वर पूर्ण सुगन्धि का स्रोत एवं अभिव्यक्ति है। जो अति श्रेष्ठ है वही सबसे मूल्यवान सुगन्धी है।

पुष्टिवर्धनम् – यह सर्वज्ञ भगवान सभी प्राणीयों का पालन–पोषण करता है।

ऐसी कोई इच्छा या आवश्यकता नहीं है जो तृप्त नहीं की जा सकती। सर्वज्ञ, दयावान, करुणामय ईश्वर भक्तों की प्रत्येक

पुकार को शीघ्र सुनते हैं और उसे आन्तरिक और बाह्य दौलत से पुरस्कृत करते है और जीवन पोषण के सभी साधन उपलब्ध करवाते हैं। ईश्वर आपका रखवाला है। वह सच्चा प्रतिपालक है। केवल वही समस्त सृष्टी और सभी प्राणियों का पोषण करता है क्योंकि उसी में इन सबका स्रोत है।

उर्वारुकमिव बन्धनात्... जिस प्रकार ककड़ी पकने पर अपनी बेल से मुक्त हो जाती है ...

मृत्योर्मुक्षीय ... उसी प्रकार, हे प्रभु मुझे मृत्यु से मुक्त कर दो, सम्पूर्ण बन्धनों से मुक्त कर दो और समस्त अज्ञान रूपी अन्धकार और दुःखों से मुक्त कर दो।

भौतिक शरीर की मृत्यु ही केवल मृत्यु नहीं बल्कि आध्यात्मिक अज्ञान, भक्ति और प्रेम का अभाव भी मृत्यु है।

जिस मनुष्य की आँख सुन्दरता को नहीं निहार सकती, उसके लिए सम्पूर्ण जगत कुरुपता से परिपूर्ण है। किसी अन्य व्यक्ति को सब कुछ संशयात्मक लगता है क्योंकि उसके विचार, संवेदनाए और अभिव्यक्ति में सत्य का अभाव हैं। भगवान जो कि सभी सत्यों का सत्य है उसके लिए अगम्य है। इस प्रकार से ये सभी मृत्यु के रूप है। ईश्वर प्रेमी भगवान से सभी प्रकार की मृत्यु से मुक्ति की याचना करता है।

अमृतात्... अमरता के लिए। अमृत का

अर्थ है अमरता, मृत्यु से मुक्ति। ईश्वर हमारा पोषण अमरता के अमृत से करते हैं– वह हमें स्वास्थ्य, शक्ति और दिव्य गुणों, दिव्य ज्ञान और शाश्वत मूल्यों को प्रदान करते हैं जो कि हमें ईशानुभूति के लिए परिपक्व बनाते हैं। अत्यधिक धैर्य, सहनशीलता की शक्ति, निःस्वार्थता, पवित्रता और अहं भाव से मुक्ति ये सभी भगवत साक्षात्कार के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार ये गुण अमरत्व के अमृत हैं।

इस प्रकार इस मन्त्र के माध्यम से हम यह कहते है :–

हे सर्वज्ञ भगवान, हम आपकी स्तुति करते हैं। हे उत्तम सुगन्धियों से युक्त प्रभु,

आप जीवन के पोषकहार और रक्षक है। जिस प्रकार ककड़ी का फल अपनी बेल से मुक्त हो जाता है उसी प्रकार हमें भी मृत्यु से मुक्ति प्रदान करें और हमें अमरता का अमृत प्रदान करें।

इस मन्त्र का जाप करते हुए इसके अर्थभाव पर ध्यान लगाएं। अपने आन्तरिक ध्यान को इस अद्भुत, सर्वगोचर और सर्वव्यापक भगवान पर लगाएं। ईश्वर आपके समक्ष, परोक्ष, उर्ध्व, निम्न और चारों ओर विद्यमान है। वह आपके अन्दर है। वह आपके नेत्रों में है। वह आपकी आत्मा में है। आप जहाँ कहीं भी देखते हैं ईश्वर वहीं पर आपके समक्ष है। आप उसे एक

चित्र के रूप में ज्योतिर्मय सूर्य के रूप में अथवा ज्वाला अथवा प्रकाश किरण के रूप में देख सकते हैं। इस सूर्य को अपने निकट आने दें, उसके प्रकाश पर ध्यान लगायें, इसकी सर्वव्यापक प्राभा के साथ एकाकार हो जायें।

यदि आप इस ढंग से मन्त्र जाप करेंगे तो आपके ऊपर ईश्वर की महान अनुकम्पा होगी। आपका पूर्ण अन्तर्मन रूपान्तरित हो जाएगा। आप पूर्ण रूपेण नये व्यक्ति बन जायेंगे। यह मन्त्र आपको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करेगा और हर प्रकार के अनिष्ट से रक्षा करेगा। यदि भूकम्प भी आजाये और आपके नीचे की जमीन को टुकड़े–टुकड़े

में फाड़ दे फिर भी कोई विपदा आपके निकट नहीं आ सकती। आप जहाँ भी होंगे आपकी रक्षा होगी।

मन्त्र जाप के लाभ

यह मन्त्र एक महान वरदान है। इसलिए इसका अत्याधिक भक्तिभाव और एकाग्रता से निरन्तर जाप करें। यदि व्यवधान आवे तो तुरन्त इन व्यवधानों को भगवद् अनुभूति के साधनों में रूपान्तरित कर दें। भगवद् चिन्तन के बजाय आप अचानक एक मोटरकार या अपनी माता का चित्र अपने सामने देख सकते है। ऐसी परिस्थिति में इस चित्र को तुरन्त एक सुन्दर सुगन्धित पुष्प के रूप में रूपान्तरित कर दें और इसे

प्रभु के चरणों में अर्पित कर दें।

ईश्वर एक है, दो नहीं। केवल एक सत्य, नित्य परमात्मा, सभी धर्मों का इष्ट देव परमात्मा, एक ही परमसत्ता की सभी सन्त महात्माओं को अनुभूति हुयी है। वायु सर्वत्र एक ही है, और एक ही तरह की है। स्विस वायु, जर्मन वायु या भारतीय वायु आदि ऐसी कोई वस्तु नहीं है। पृथ्वी का सम्पूर्ण प्राणी जगत एक ही वायु से संपोषित होता है। उसी प्रकार ईश्वर एक ही है जो प्रत्येक प्राणी की रक्षा करता है, नाम अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन ईश्वर एक ही है। चाहे आप वायु कहें या पवन इसका सम्बन्ध एक ही पदार्थ से है।

ईश्वर प्राणों का प्राण, जीवन का प्राण और समस्त चराचर प्राणी जगत का प्राण है। वह सभी आत्माओं की आत्मा है।

जब आप ध्यान करने के बाद उठते हैं, तो गपशप या संसारिक गतिविधियों में न उलझें, आन्तरिक शान्ति और ध्यानावस्था को बनाए रखें और अपनी दिनचर्या व कर्तव्यों के निर्वाह में व्यस्तता के समय भी मानसिक रूप से मन्त्र जाप करते रहें। अपने सारे कार्य भगवान को समर्पण कर दें। हर समय अपने ध्यान को भगवान पर स्थित रखें, जिस तरह एक माँ अपने घर के कार्यों में व्यस्त रहने के साथ–साथ अपने शिशु पर लगातार दृष्टि बनाए रखती है।

मन्त्र में स्वयं अत्याधिक शक्ति निहित होती है। ईश्वर में आपका जितना अधिक भक्तिभाव और विश्वास बढ़ेगा तो आपका मन्त्र जाप उतना ही अधिक शक्तिशाली बनता जाएगा।

भगवान से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करें। आवश्यक नहीं कि आपको ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त हो। फिर भी अत्याधिक भक्तिभाव, अनवरत प्रार्थनायें और ध्यान आपको ईश्वर सानिध्य के प्रत्यक्ष ज्ञान के प्रति ग्रहणशील बनाता है। नामरहित, निराकार, ईश्वर, देश व काल रहित दिव्य चेतना एक सच्चे भक्त के समक्ष किसी भी रूप में कहीं भी और कभी भी प्रकट हो

सकती है। कोई भी शक्ति इतनी महान नहीं है जितनी मन्त्र शक्ति। मन्त्र एक गूढ़ शक्ति है। इसमें दिव्य उर्जा सन्निहित है।

— स्वामी ओंकारानन्द

ॐ

महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ॥

महामृत्युंजय मन्त्र वह मन्त्र है जो हमारी महा – मृत्यु पर विजय पाता है। यह महा मृत्यु हमारा आध्यात्मिक अज्ञान है जो कि हमें दिव्य सौन्दर्य की आभा एवं पूर्ण ब्रह्म के प्रति अन्धा बना देता है।

यह शक्तिशाली और अन्तर्बोधक प्रार्थना एक अद्भुत गुणकारी अमोघ औषधि है, अच्छे स्वास्थ्य, दीर्घ आयु और दुर्घटनाओं से रक्षा कवच मन्त्र है। लेकिन इससे भी बढ़कर यह ईश्वरानुभूति का एक शक्तिशाली माध्यम है।

ॐ